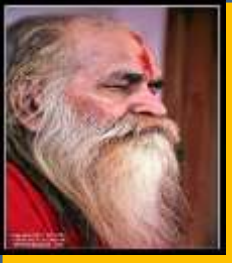

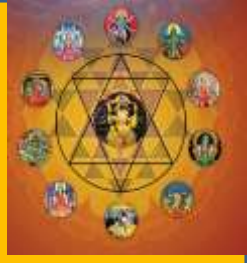

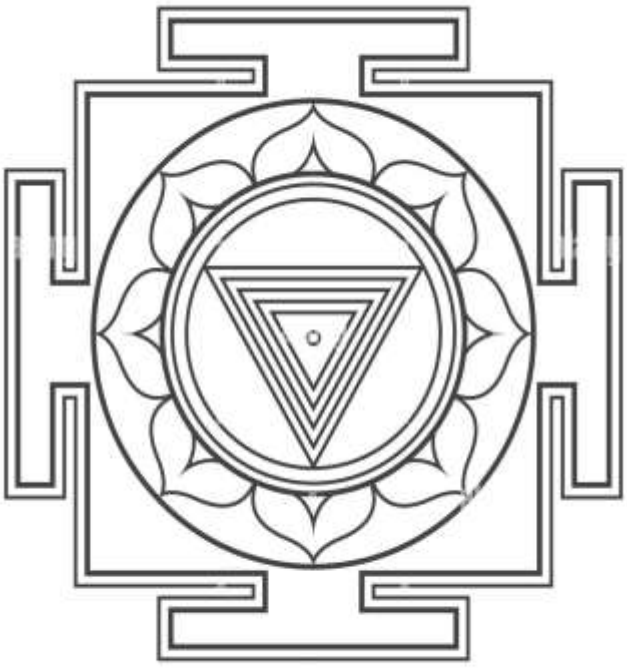

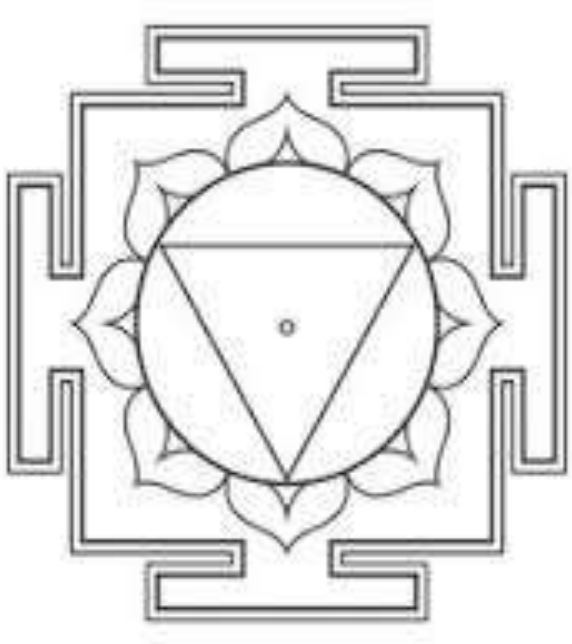

सौजन्य: मां पाताल भैरवी मन्दिर, श्री बर्फानीधाम,
राजनांदगांव, छत्तीसगढ़, भारत

श्रीकाली-महाविद्या

मन्त्र-परिचय

प्रथम महाविद्या

क्रोधीश-त्रितयं वह्नि-वामाक्षि-विधुभिर्युतम्।
वराह-द्वितयं वामकर्ण-चन्द्र-समन्वितम्।।
मायायुग्मं दक्षिणे च दीर्घासष्टिः सदृकक्रिया।
चक्री-झिंटीशमारूढः प्रागुक्तं बीजसप्तकम्।।
मन्त्रो-वह्नि-प्रियां-तोयं द्वाविंशत्यक्षरो-मतः।
न चात्र-सिद्धसाध्यादि-शोधनं मनसापि च।।

...मन्त्रमहोदधि

अथ मन्त्रः

क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।

क्रीं- क्रोधीश (क) के साथ विधु (र) एवं वामाक्षि (ई) दो कूर्च हूँ - वराह (ह), वामकर्ण (ऊ) एवं चंद्रमा अनुस्वार सहित, मायाबीज (ह्रीं) फिर दक्षिणे, दीर्घासृष्टि (का) सदृकक्रिया (लि) झिंटीश सहित चक्री (के), अन्त में वह्निप्रिया (स्वाहा) - इस प्रकार से 22 अक्षरों वाला यह मन्त्र बनता है इस मन्त्र के लिए सिद्ध-साध्य आदि शोधन की आवश्यकता नहीं है । इस मन्त्र के ऋषि भैरव है, छन्द उष्णिक् है, **श्रीमद्दक्षिणकाली** देवता हैं, **ह्रीं** शक्ति है, **क्रीं** बीज है तथा दीर्घवर्म **हूँ** कीलक है । **परम्परानुसार बीज, शक्ति एवं कीलक में अन्तर देखने मिलता है ।** मन्त्र का अर्थ निम्नानुसार बतलाया गया है -

क्रीं क्रीं क्रीं= ककार मोक्षदायक तथा रकार सर्वतेजोमय है। ईकार शक्ति तथा बिन्दु ब्रह्म स्वरूप है। इस प्रकार क्रीं ये 3 बीज सृष्टि, स्थिति एवं प्रलयकारी है।

हूँ हूँ = हकार ज्ञान,अकार गुरु तथा बिन्दु परम शिव है। अतः ये दोनों बीज शब्द एवं शब्दार्थ ज्ञान देने वाले हैं। ह्रीं ह्रीं = हकार परम ज्ञान, रकार परम तेज, ईकार पराशक्ति तथा बिन्दु परब्रह्म है। ये दोनों बीज सृष्टि एवं स्थिति करने वाले हैं। श्रीमद्दक्षिणकालिके - यह सम्बोधन देवी का सान्निध्य देने वाला है ।

स्वाहा - यह मन्त्र जगत् का मातृस्वरूप तथा समस्त पापों का नाशक है।

दशमहाविद्याओं में काली प्रथम विद्या है। दार्शनिक दृष्टि से कालतत्त्व की प्रधानता को सर्वोपरि माना गया है इसलिए महाकाल की शक्ति महाकाली अपने दक्षिण और वाम रूपों में दशमहाविद्याओं के नाम से विख्यात हुई। महाभागवत के अनुसार महाकाली ही मुख्य हैं और उन्हीं के उग्र और सौम्य दो रूपों से अनेक रूप अवतरित हुए जो कि दशमहाविद्याएँ कहलायी। ये महाविद्याएँ अनन्त सिद्धियाँ प्रदान करने में समर्थ हैं । दुर्गासप्तशती के अनुसार शुम्भ-निशुम्भ के अत्याचार से व्यथित होकर जब देवताओं ने माँ जगदम्बा की स्तुति की तब उनकी देह से कौशिकी का प्राकट्य हुआ। कौशिकी के अलग होते ही जगदम्बा का स्वरूप कृष्ण हो गया जो काली नाम से विख्यात हुआ। काली को नीलरूपा होने के कारण तारा भी कहा जाता है। काली की उपासना में सम्प्रदायगत भेद है। भक्ति मार्ग में किसी भी रूप में महामाया की उपासना फलप्रदा है परन्तु सिद्धि के लिए उनकी उपासना वीरभाव से की जाती है। तान्त्रिक मार्ग में काली की उपासना दीक्षागम्य है, तथापि अनन्य शरणागति के द्वारा उनकी कृपा किसी को भी प्राप्त हो सकती है। मूर्ति, मन्त्र अथवा गुरुप्रदत्त मार्ग से किसी भी आधार पर भक्ति भाव से मन्त्र जप, पूजन, हवन और पुरश्चरण करने से भगवती काली की प्रसन्नता प्राप्त होती है जिससे साधको को सहज ही अभीष्ट की प्राप्ति हो जाती है।

भगवती काली के प्रादुर्भाव की कथा मार्कण्डेयपुराण, कालिकापुराण तथा नारदपञ्चरात्र में उल्लेखित है। महानिर्गुण की अधिष्ठात्री होने से इनकी उपमा अन्धकार से की जाती है और यही महासगुण होकर सुन्दरी कहलाती हैं। बृहन्नीलतन्त्र में कहा गया है कि-

विद्या हि द्विविधा प्रोक्ता कृष्णा-रक्ता-प्रभेदतः।
कृष्ण तु दक्षिणा प्रोक्ता रक्ता तु सुन्दरी मता ।।

महाकाल शक्तिमान है और उनकी शक्ति महाकाली है। शक्ति शक्तिमान से अभिन्न है जैसे अग्नि की दाहक शक्ति अग्नि से अभिन्न है, सूर्य से प्रकाश अभिन्न है उसी प्रकार परमात्मा की शक्ति परमात्मा से अभिन्न है और सारी सृष्टि शिव-शक्ति के रूप में दृष्टिगोचार है। अर्द्धनारीश्वर की उपासना का यही मौलिक स्वरूप है। शक्ति की उपासनाओं में शक्ति के अनेक स्वरूप हैं। किसी की दो भुजा, किसी की चार भुजा, किसी की आठ भुजा, किसी की चौसठ भुजा, किसी के हाथ में कमल, किसी के हाथ मे नरमुण्ड, किसी के हाथ में पाश, किसी के में परशु, कोई मुर्दे पर खड़ी, कोई सुरापान कर रही, कोई नग्न इत्यादि स्वरूप हैं। अतः जब भी किसी भी देवता की उपासना करते हैं तब आरम्भ में ही ध्यान किया जाता है और उस ध्यान में उस ईष्ट के स्वरूप का ध्यान किया जाता है। शाक्तप्रमोद-कालीतन्त्र में महाकाली का स्वरूप इस प्रकार कहा गया है -

शवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम् ,चतुर्भुजां खड्गमुण्डवराभयकरां शिवाम्।
मुण्डमालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम्, एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं श्मशानालयवासिनीम् ।।

अर्थात् भगवती महाकाली शव पर आसीन, अत्यन्त डरावने शरीर की आकृति वाली, महाभयानक तथा बड़ी तीक्ष्ण दंष्ट्रा वाली और भयानक रूप वाली माता हॅसमुखी हैं। महाकाली के चार हाथ हैं, गले में मुण्डमाला है, एक हाथ में खड्ग, दूसरे में नरमुण्ड, तीसरे में अभयमुद्रा एवं चौथे में वरमुद्रा है। सर्वथा दिगम्बर हैं और जिह्वा बाहर निकल रही है। श्मशान ही उनका आवास है। ऐसी शक्ति का मैं ध्यान करता हूँ।

महाकाली महाप्रलय की अधिष्ठात्री हैं। तथा यह महाशक्ति प्रलयकाल से सम्बन्ध रखती है महाकाली के स्वरूप में भद्रकाली, श्मशानकाली तथा दक्षिणकाली की उपासना प्रचलन में है इसके अलावा भी काली के अनेक भेदों-स्वरूपों की उपासना की जाती है जिसका वर्णन अन्यान्य ग्रन्थों में उपलब्ध है। महाविद्या रत्नाकरः में दक्षिणकाली की सपर्या दी जा रही है। काली का दक्षिण या दक्षिणा नाम क्यों पड़ा? इस पर कई मत हैं। सर्वप्रथम दक्षिणामूर्ति भैरव ने इनकी आराधना की थी इस कारण देवी का नाम दक्षिणाकाली पड़ा। एक मत यह भी है कि जिस प्रकार पूजा की समाप्ति के बाद फल सिद्धि हेतु दक्षिणा देने का विधान है उसी प्रकार भगवती सभी कर्म फलों की सिद्धि प्रदान करती हैं इसलिए उनका नाम दक्षिणा है। एक मत यह भी है कि भगवती वर देने में बहुत चतुर हैं इसलिए उन्हें दक्षिणा कहा गया है। निर्वाणतन्त्र के अनुसार यम की दिशा दक्षिण है और काली का नाम सुनते ही यम दूर भाग जाते है इस कारण भी भगवती को दक्षिणकाली कहते हैं। पुरुष को दक्षिण तथा शक्ति को वामा कहते हैं इसलिए तीनों लोको में भगवती को दक्षिण नाम से व्यहृत किया गया है। सभी प्रकार के रङ्गो का लय काले रङ्ग में समाहित हो जाता है इसी प्रकार संसार के समस्त जीवों का लय काली में होता है तभी तो काली को प्रलयकाल की अधिष्ठात्री माना गया है। भगवती काली का निवास श्मशान कहा गया है परन्तु यहाँ श्मशान का अर्थ वह स्थान नहीं है जहाँ प्राणियों के शव जलाये जाते हैं अपितु इसका अर्थ है पञ्चमहाभूतों का परब्रह्म में लय होना। भगवती काली परब्रह्म स्वरूपा हैं और पञ्चमहाभूतों का जहाँ लय हो रहा है वही श्मशान है,वहीं भगवती का निवास है। इन पञ्चमहाभूतों को साधक अपने हृदय में भस्म करें और हृदयरूपी श्मशान में अपने ज्ञान के अग्नि से अपने राग-द्वेष आदि विकारों को नष्ट करे तब श्मशानरूपी ऐसे हृदय में भगवती काली निवास करती हैं। भगवती काली की उपासना अन्यान्य ग्रन्थों में वर्णित है जैसे रूद्रयामलतन्त्र, मन्त्रमहोदधि, मन्त्रमहार्णव, शाक्तप्रमोद-कालीतन्त्र, श्रीविद्यार्णवतन्त्रम् इत्यादि। जिज्ञासु साधक ज्ञानार्जन के लिए विविध ग्रन्थों से लाभ ले सकते हैं।